2 अप्रैल 2016, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के
व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रतिदिन
प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 39, अंक : 1 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
अप्रैल (प्रथम), 2016 (वीर नि. संवत्-2542) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

अष्टाह्निका महापर्व सानन्द संपन्न

(1) मुम्बई में अष्टाह्निका पर्व के अवसर पर अनेक स्थानों पर प्रवचनों का आयोजन हुआ, जिसमें सीमंधर जिनालय में पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, मलाड (ईस्ट) में पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर, बोरीवली (वेस्ट) में पण्डित अश्विनभाई शाह मलाड, घाटकोपर (ईस्ट) में पण्डित जयकुमारजी जैन कोटा, वसई (ईस्ट) में पण्डित अनिलभाई शाह, मलाड (वेस्ट) में पण्डित राहुलजी शास्त्री अलवरवाले मुम्बई, दहिसर (ईस्ट) में पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री, भायंदर (वेस्ट) में पण्डित नीलेशभाई शाह, दादर (वेस्ट) में पण्डित मनीषजी इन्दौर तथा देवलाली में पण्डित चेतनभाई मेहता राजकोट, ब्र. हेमचंदजी, पण्डित देवेन्द्रजी बिजौलिया व दीपकजी धवल भोपाल का सानिध्य प्राप्त हुआ। **- वीनूभाई शाह**

(2) तीर्थराज सम्मेदशिखर (झारखण्ड) : यहाँ अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर श्री कुन्दकुन्द कहान तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट मुम्बई द्वारा संस्थापित कुन्दकुन्द कहान नगर में पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा द्वारा तीनों समय ग्रन्थाधिराज समयसार की 47 शक्तियों के आधार पर प्रवचन हुये। इसके अतिरिक्त चन्द्रप्रभ पंचकल्याणक विधान एवं शांति मण्डल विधान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुम्बई, उदयपुर, हरदा आदि स्थानों से पधारे अनेक साधर्मियों ने लाभ लिया।

विधि-विधान के कार्य पण्डित अमितजी जैन अरिहंत मड़ावरा द्वारा संपन्न कराये गये। **- चन्द्रप्रकाश जैन**

(3) जयपुर-जनता कॉलोनी (राज.) : यहाँ फाल्गुन माह की अष्टाह्निका के अवसर पर दिनांक 16 से 23 मार्च तक जनता कॉलोनी जैन सभा के सहयोग से इन्द्रध्वज महामंडल विधान का वृहद् स्तर पर आयोजन किया गया। विधि-विधान के समस्त कार्य डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा पण्डित राजेशजी शास्त्री जयपुर, पण्डित अभिनयजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित पंकजजी शास्त्री, पण्डित निलयजी शास्त्री के सहयोग से संपन्न हुये।

कार्यक्रम में लगभग 200-250 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

इस अवसर पर प्रतिदिन सायंकाल श्रीमती कुसुमजी चौधरी किशनगढ द्वारा जिनागम के महत्वपूर्ण सिद्धांतों पर मार्मिक कक्षा ली गई। तदुपरान्त डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के सारगर्भित प्रवचनों का लाभ मिला।

(शेष पृष्ठ 8 पर ...)

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित एवं
अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, विदिशा द्वारा आयोजित

50वाँ स्वर्ण जयन्ती वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर

दिनांक 15 मई 2016 से 1 जून 2016 तक

- आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के भवतापहारी सी.डी. प्रवचन का प्रसारण।
- डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना आदि अनेक आत्मार्थी विद्वानों का प्रवचन, कक्षाओं के माध्यम से भरपूर लाभ।
- पाठशाला के अध्यापकों को बालबोध पाठमालायें एवं वीतराग-विज्ञान पाठमालाओं के अध्यापन हेतु विशेष प्रशिक्षण।
- देशभर के अलग-अलग प्रान्तों से पधार रहे साधर्मीजनों का मेला।
- श्री टोडरमल सिद्धान्त महाविद्यालय में प्रवेश लेने हेतु अपूर्व अवसर।
- बालकों हेतु डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई द्वारा विशेष कक्षायें।

आप सभी को शिविर में पधारने हेतु हार्दिक आमंत्रण है।

हार्दिक अनुरोध - श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धांत महाविद्यालय हेतु छात्रों का चयन इसी प्रशिक्षण शिविर में होता है; अत: महाविद्यालय में प्रवेश हेतु अधिक से अधिक छात्रों को प्रेरणा देकर शिविर में भिजवायें।

संपर्क सूत्र -

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर 302015 (राज.) फोन-0141-2705581, 2707458;
Email - ptstjaipur@yahoo.com
एम.जे. टॉवर, घर संसार, मेन रोड़, माधवगंज, विदिशा-464001 (म.प्र.) फोन नं. 07592-403564
ई-मेल : vidishashivir@gmail.com

सम्पादकीय –

संस्कारों का महत्व

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

जब भी उसकी पत्नी पिक्चर का प्रोग्राम बनाती, तभी उन्हें प्रवचन में जाना होता है, जब वह गर्मियों की छुट्टी बिताने के लिये शिमला का प्रोग्राम बनाती तो वही टाइम उनके शिक्षण शिविर में जाने का होता। एक बात हो तो अलग। उसकी माँ अलग अपने दु:ख रोती फिरती, पत्नी अलग। न बाबा ! अपने को तो यह सब पसंद नहीं है। फिर आपकी मर्जी।''

मँझली लड़की ने छाप लगाते हुये कहा –''पापा ! दीदी ठीक ही कह रही हैं। हमारे बम्बई का भी एक लड़का वहाँ पढने गया था। वह तो और भी दो कदम आगे निकल गया। कहता है –'मैं तो शादी ही नहीं करूँगा, क्या धरा है इस असार संसार में ? मनुष्य भव ऐसे बार-बार थोड़े ही मिलता है। वह आत्मा आत्मा ! भगवान आत्मा ही करता रहता है। वैसे प्रवचन बहुत अच्छे करता है, हजारों लोग उसकी सभा में आते हैं और बिलकुल शांत बैठे-बैठे उसी के मुँह की ओर टकटकी लगाये देखा करते हैं; पर क्या बतायें, मानो उसे तो भगवान आत्मा की बीमारी-सी हो गई। खाने-पीने के मामले में भी वही हाल जो दीदी के दिल्ली वाले का है।

इसलिये मेरा तो ऐसा विचार है कि आप तो किसी अच्छे हॉस्टल में प्रवेश दिला दो, वहाँ इस बेचारे को पढाई का और होमवर्क करने को खूब समय भी मिल जायेगा। जब हम पढते थे तो इस बेचारे को होमवर्क को ही टाइम नहीं मिलता था। जब किसी भी काम को बोलो तो बोलता – दीदी मेरा होमवर्क कौन करेगा ? हूँह...।''

सब अपनी-अपनी कहे जा रहे थे और डॉक्टर सबकी बातों को शान्ति से सुन रहा था। अंत में वह इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि एक बार स्वयं वहाँ जाकर सब अपनी निजी आँखों से देखना-समझना चाहिये। सुनी-सुनायी सब सच नहीं होती। वास्तविकता क्या है ? वहाँ जाने से ही पता चलेगा।

हॉस्टल वगैरह तो व्यर्थ की बकवास है, उसकी दुर्दशा तो मैंने स्वयं भी देखी है।

डॉ. धर्मचन्द ने सबकी बातें सुनकर अपनी राय कायम करते हुये कहा –''देखो ! हॉस्टल में तो मैं भूलकर भी नहीं भेजूँगा। वहाँ तो अच्छे-अच्छे लड़के बिगड़ जाते हैं, तुम राजू की बात करती हो। देखा नहीं तुमने विज्ञान को ? कितना सीधा-सादा-सज्जन लड़का था वह, फिर उसे तो उसके दादाश्री द्वारा बचपन में चार-पाँच वर्ष तक कुछ सदाचार के संस्कार भी मिल गये थे, फिर भी वह हॉस्टल में जाकर पथभ्रष्ट हो गया था।

वहाँ बिगड़ने में लड़कों के बजाय वहाँ के वातावरण का ही अधिक हाथ होता है। जिस तरह ऊँट पर बैठने वाले को मलकना ही पड़ता है। यदि सवार ऊँट की मलक में मलक न मिलाये तो उसकी कमर ही टूट जाये। यही स्थिति वहाँ के आवासी छात्रों की होती है। उन्हें भी बाध्य होकर उन परिस्थितियों से समझौता करना ही पड़ता है। अन्यथा उन्हें उन हॉस्टलों में रहना कठिन हो जाता है।

और तो और अधिकारियों को भी छात्रों से मिलजुलकर ही अपना निर्वाह करना पड़ता है, अन्यथा उनकी हूटिंग करने में भी उन्हें क्या देर लगती है ? और अधिकारियों की भी ऐसी क्या अटक रही है, जो व्यर्थ ही झंझट मोल लें।

शराब और सिगरेट तो मानो वहाँ की सभ्यता में शामिल हो गये हैं। आये दिन सिनेमा, संगीत-नृत्य और नौटंकियाँ देखना भी उनकी चर्या के अभिन्न अंग बन जाते हैं। जो शामिल न होना चाहे तो भी उसे शामिल होना पड़ता है, अन्यथा नाना यातनायें सहनी पड़ती हैं सो अलग। और पढ तो सकते ही नहीं, लाइट गुम कर दी जायेगी; पुस्तकें गायब कर दी जायेंगी, और भी जो सम्भव होगा, कुछ भी करने से नहीं चूकेंगे।

अत: हॉस्टल का तो तुम नाम ही मत लो, वहाँ भेजने का तो प्रश्न ही नहीं है। रही बात सिद्धान्त महाविद्यालय में भेजने की, सो उसके बारे में भी पूरी छानबीन और तलाश करके और पूर्ण संतोष होने पर ही निर्णय करेंगे। अत: तुम निश्चिंत रहो। **(क्रमश:)**

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

50वें स्वर्ण जयंती प्रशिक्षण शिविर विदिशा हेतु आवास पंजीकरण पत्र

श्री वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण प्रशिक्षण शिविर

रविवार, 15 मई 2016 से बुधवार 1 जून 2016 तक

आयोजक – 1. श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन मुमुक्षु मंडल ट्रस्ट, विदिशा
2. अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, विदिशा

संचालक – पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर

कार्यक्रम स्थल – विनायक बेंक्वेट हॉल, स्वर्णकार कॉलोनी, विदिशा

प्रमुख व्यक्ति का नाम		कुल संख्या
पूर्ण पता		
शहर	पिनकोड	राज्य
एस.टी.डी. कोड	फोन नं.	मोबाइल नं.
ई–मेल		

आप किन ताराखों में शिविर में भाग लेंगे उन सभी तारीखों पर ✓ लगायें

15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	1

साधर्मियों का विवरण

क्रम सं.	साधर्मी का नाम	पिता/पति का नाम	स्त्री/पुरुष	उम्र	टिप्पणी

विदिशा पहुंचने का साधन : हवाई जहाज ☐ ट्रेन ☐ बस ☐ स्वयं का साधन ☐

नोट : 1. आवास आरक्षण की अंतिम तिथि 10 अप्रैल 2016 तक है। 2. आगंतुक महानुभाव अपने मुखिया की आई.डी. फोटो कॉपी फार्म के साथ अवश्य संलग्न करें। 3. कृपया सभी साधर्मियों की फोटो अवश्य भेजें। 4. अपने घर का एक अन्य फोन नं./मोबाइल नं. अवश्य दें (इमरजेंसी संपर्क हेतु)। 5. यदि आवास व्यवस्था सशुल्क चाहिये तो उसका विवरण अवश्य दें। 6. विदिशा नगरी भोपाल से 54 कि.मी. की दूरी पर मुम्बई–दिल्ली सेन्ट्रल लाइन पर स्थित है।

संपर्क सूत्र : (1) अतुल कुमार जैन, 09827613242 (2) इंजी. संजय जैन, 09009690699

कार्यालय : एम.जे. टॉवर, घर संसार, मेन रोड़, माधवगंज, विदिशा–464001 (म.प्र.) फोन नं. 07592–403564

विशेष निवेदन : कृपया अपना फार्म प्राथमिकता के आधार पर हमारी ई–मेल आई.डी. vidishashivir@gmail.com पर भेजें। इसके अलावा आप पत्र/वॉट्स–एप के माध्यम से भी भेज सकते हैं। इस फार्म की प्रति website : www.ptst.in पर भी उपलब्ध है।

कार्यालय उपयोग हेतु

आवास स्थान ..... रजिस्ट्रेशन नं. .....

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट
स्वर्ण जयन्ती महोत्सव वर्ष 1967-2017

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट स्वर्ण जयन्ती महोत्सव वर्ष के उपलक्ष्य में देशभर में पूरे साल तत्त्वज्ञान के प्रचार–प्रसार से संबंधित अनेक योजनायें संचालित की जावेंगी, जिसमें मुख्य कार्यक्रम निम्नानुसार हैं –

1. शाश्वत तीर्थधाम सम्मेद शिखर में आगामी 9 से 14 अक्टूबर तक 1008 इन्द्रों द्वारा समयसार विधान एवं आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का विशाल आयोजन किया जावेगा। इस अवसर पर स्नातक परिषद्, अ.भा. जैन युवा फैडरेशन एवं अ.भा. दि.जैन विद्वत्परिषद् का राष्ट्रीय अधिवेशन इत्यादि अनेक महत्वपूर्ण कार्यक्रम भी आयोजित किये जावेंगे।
   नोट :– शिखरजी में होने वाले समयसार विधान एवं शिविर के लिये आवास व्यवस्था संबंधी विस्तृत रूपरेखा आगामी अंक में प्रकाशित की जावेगी।
2. ग्रीष्मकाल के अवसर पर देशभर में बालसंस्कार शिविरों, आध्यात्मिक शिक्षण शिविरों, ग्रुप शिविरों और युवा शिविरों का आयोजन किया जावेगा।
3. वर्षभर देश के अनेक स्थानों पर समयसार विधान का आयोजन किया जावेगा।
4. देशभर में स्वाध्याय सभाओं और व्यक्तिगत स्वाध्याय हेतु मोक्षमार्गप्रकाशक स्वाध्याय वर्ष का संचालन किया जावेगा, जिसके अन्तर्गत मोक्षमार्गप्रकाशक ग्रन्थ का स्वाध्याय किया जावेगा। इसके लिये अध्ययन सामग्री, प्रश्न–पत्र केन्द्र द्वारा उपलब्ध कराया जावेगा, इसकी विस्तृत रूपरेखा इसी अंक में प्रकाशित की गई है।
5. आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी द्वारा विशेष रूप से प्रतिपादित क्रमबद्धपर्याय, पुण्य–पाप, सम्यग्दर्शन, षट्कारक, निमित्त–उपादान, वस्तुस्वातंत्र्य, द्रव्य–गुण–पर्याय, सर्वज्ञता आदि महत्वपूर्ण सिद्धांतों पर देशभर में विचार गोष्ठियों का आयोजन किया जावेगा।
6. युवा पीढी को तत्त्वज्ञान से परिचित कराने हेतु अंग्रेजी भाषा में पाठ्यक्रम बनाकर, उसे पढाने वाले अध्यापकों को तैयार किया जावेगा।
7. गाँव–गाँव में पत्राचार द्वारा जैनदर्शन की पढाई (सिद्धांत विशारद डिग्री) हेतु लोगों को प्रेरितकर टोडरमल मुक्तविद्यापीठ का संचालन करना।
8. दशलक्षण पर्व के अवसर पर गाँव–गाँव में स्वर्ण जयंती महोत्सव का आयोजन।
9. नवीन साहित्य का प्रकाशन, पाठशालाओं का संचालन एवं अ.भा. जैन युवा फैडरेशन की शाखाओं का पुनर्गठन किया जावेगा
10. तत्त्वज्ञान के प्रचार–प्रसार हेतु और भी अनेक प्रकार की योजनाओं को बनाकर उनका तात्कालिक व स्थायी रूप से संचालन करना।
11. फरवरी 2017 में जयपुर में भव्य समापन समारोह।

संपर्क :– पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए–4, बापूनगर, जयपुर 302015 (राज.)
फोन नं.0141–2705581, 2707458, 07297973664, E-mail : ptstjaipur@yahoo.com, ptst50years@gmail.com

स्वर्ण जयंती के मायने (3)

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल (कार्यकारी महामंत्री-टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

पूज्य गुरुदेवश्री एक महान आत्मार्थी थे। देश के एक कोने में बैठकर उन्होंने जिनवाणी का गहन स्वाध्याय किया, तीर्थंकरों, गणधरदेव तथा आचार्यों के हार्द को समझा और आत्मसात किया। इतना ही नहीं, नियमित रूप से दिन में दो बार व्याख्यान व एक बार तत्त्वचर्चा करके जिनवाणी के आत्महितकारी मर्म को उद्घाटित भी किया। उनके अनुपम उद्घाटनों की कीर्ति दूर-दूर तक फैलने लगी और लोग उनके श्रीमुख से जिनवाणी का रहस्य सुनने-जानने के लिये सोनगढ आने लगे। यह उनके सरल, निश्छल व्यक्तित्व और आत्महितकारी व्याख्यानों का चमत्कारी प्रभाव ही था कि जो उनके पास आता, उनका ही हो जाता। उक्त स्वाध्यायी महानुभाव अपने-अपने गाँव-शहर में जाकर अपने परिजनों और साथियों से इसकी चर्चा करते और लोग जुड़ते जाते। इसप्रकार व्यक्तिगत स्वाध्याय की प्रक्रिया एक सामूहिक स्वाध्याय और प्रवचन की गतिविधि के रूप में विकसित हो जाती। इसप्रकार गाँव-गाँव में स्वाध्याय की अनुपम परम्परा का शुभारम्भ हुआ। मोक्ष के इच्छुक स्वाध्यायी लोग मुमुक्षु कहलाने लगे और उनका समूह कहलाने लगा मुमुक्षुमण्डल। इसप्रकार स्थान-स्थान पर मुमुक्षु मंडलों की स्थापना हुई।

कालान्तर में वे स्वाध्यायी मुमुक्षु जो अपने-अपने गाँव में प्रवचन करने लगे थे-पण्डितजी कहलाने लगे। आमंत्रण मिलने पर अन्य स्थानों पर वे भी प्रवचन के लिये जाने लगे। ऐसे विद्वान, पण्डित लोग आजीविका के लिये समाज पर निर्भर नहीं थे। वे स्वयं व्यवसायी या सेवारत थे, आर्थिकरूप से आत्मनिर्भर थे तथा मात्र स्वयं के स्वाध्याय और अन्य आत्मार्थियों के लाभ हेतु सेवाभाव से ही प्रवचनादिक करते थे तथा मात्र स्वयं के स्वाध्याय और अन्य आत्मार्थियों के लाभ हेतु सेवाभाव से ही प्रवचनादिक करते थे। इतना ही नहीं आवश्यकता होने पर स्वयं तत्त्वप्रचार हेतु दानादिक भी देते थे। इसप्रकार समाज में एक नये पण्डित वर्ग का विकास हुआ, जिसने 'पण्डित' शब्द को एक विशिष्ट गौरव व गरिमा प्रदान की।

इसप्रकार तत्त्वप्रचार का सिलसिला जाने-अनजाने ही देशभर में फैल गया।

श्रावण माह में सोनगढ में आयोजित होने वाले शिक्षण शिविरों में बड़ी मात्रा में लोग आने लगे। अन्य सुविधाओं की परवाह किये बिना मात्र तत्त्वलाभ के लिये वहाँ रहने लगे। आधारभूत लौकिक सुविधाओं के अभाव के बावजूद ऐसे शिक्षण शिविरों ने देश के जनमानस के मनोमस्तिष्क में अपना एक विशिष्ट स्थान बना लिया और इसप्रकार आध्यात्मिक शिक्षण शिविरों की परम्परा का सूत्रपात हुआ।

इसप्रकार हम पाते हैं कि पूज्य गुरुदेवश्री ने धर्म और धार्मिकता को समाज में स्थापित ही नहीं किया; अपितु जनमानस में एक विशिष्ट व सम्माननीय स्थान दिलाया। समाज के बीच विद्वानों और विद्वत्ता को स्थापित किया। उन्हें यथोचित आदर व सम्मान का अधिकारी बनाया तथा शिक्षण शिविरों के माध्यम से धार्मिक-आध्यात्मिक शिक्षण की एक अत्यंत प्रभावशाली विशिष्ट शैली का विकास किया। इसप्रकार हम पाते हैं कि गूढ आध्यात्मिक मर्मी के उद्घाटन के अतिरिक्त समाज में इन युगान्तरकारी परिवर्तनों के रूप में भी पूज्य गुरुदेवश्री का योगदान ऐतिहासिक व अविस्मरणीय है।

गूढ स्वाध्याय की परम्परा का प्रारम्भ तो हो गया और जो लोग इससे जुड़े वे इसके प्रति पूरी तरह से समर्पित भी हो गये; परन्तु जैन आगम का सर्वांग अभ्यास हो, जिज्ञासुओं को प्राथमिक स्तर से लेकर व्यवस्थित तरीके से क्रमश: सभी अनुयोगों का अध्ययन करने की सुविधा मिले, ताकि लोग पूज्य गुरुदेवश्री द्वारा उद्घाटित जिनवाणी के मर्म को सही अर्थों में आत्मसात कर सकें, यह तत्त्वज्ञान किस प्रकार सर्वत्र सभी के लिये सुलभ हो और जन-जन की वस्तु बन सके, इस क्षेत्र में भागीरथ प्रयासों की आवश्यकता थी।

धर्म के संस्कार और धार्मिक शिक्षा का यह उपक्रम बचपन से ही प्रारम्भ हो यही उपयुक्त और परमावश्यक है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुये बालकों के लिये सरल, सुबोध भाषा और रोचक शैली में एक ऐसे पाठ्यक्रम की रचना की गई, जो अपने आप में परिपूर्ण है, जिसमें चारों अनुयोगों को समाहित किया गया है।

उक्त पाठ्यक्रम के अन्तर्गत निम्नलिखित पाठमालाओं की रचना की गई-

- बालबोध पाठमाला भाग - 1, 2, 3
- वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग - 1, 2, 3
- तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग - 1, 2

उक्त पाठमालाओं में प्रत्येक में चारों अनुयोगों को समाहित किया गया है तथा गद्य, पद्य व संवाद शैली के पाठों की रचना की गई है -

जहाँ एक ओर मूलभूत पारिभाषिक शब्दों से पाठकों को परिचित कराया गया है व साथ ही जैनदर्शन के सन्दर्भ में उन शब्दों का विशिष्ट भावार्थ भी बालकों को स्पष्ट हो सके इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है।

कुछ तीर्थंकरों के जीवन से पाठकों को परिचित कराया गया है, तो कुछ पाठों में आधार परिचय के माध्यम से कतिपय आचार्यों के व्यक्तित्व व कर्तृत्व से भी परिचित कराया गया है।

जैन श्रावक के आचरण और व्यवहार की चर्चा की गई है तो करणानुयोग संबंधी चर्चाओं को समाहित किया गया है।

उक्त सभी विषयों की चर्चा करते हुये इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि वह चर्चा सम्पूर्ण तो हो; पर छात्रों के स्तर के अनुकूल ही हो, बोझिल न हो। **(क्रमश:)**

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

17 से 19 अप्रैल	ग्वालियर	महावीर जयन्ती
22 से 24 अप्रैल	उदयपुर (राज.)	कन्या छात्रावास का उद्घाटन
4 से 7 मई	देवलाली	गुरुदेव जयन्ती
8 मई	दिल्ली	उपकार दिवस
15 मई से 1 जून	विदिशा	प्रशिक्षण शिविर
15 जून से 15 जुलाई	विदेश यात्रा	धर्मप्रचारार्थ

मोक्षमार्गप्रकाशक स्वाध्याय वर्ष

1. पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट स्वर्ण जयन्ती महोत्सव वर्ष के अन्तर्गत यह वर्ष मोक्षमार्गप्रकाशक स्वाध्याय वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है।
2. इस वर्ष 1 मई 2016 से मोक्षमार्ग प्रकाशक ग्रन्थ का आद्योपान्त क्रमश: स्वाध्याय किया जावेगा।
3. किसी भी आयु/वर्ग का व्यक्ति इस योजना में शामिल हो सकता है। यदि कोई बीच में इस योजना में सम्मिलित होना चाहता है, उसे पहले पूर्व का पाठ तैयार करना होगा।
4. इस योजना में शामिल होने के लिये आपको मात्र एक प्रवेश फार्म भरना है।
5. इसके अन्तर्गत मई माह से प्रत्येक माह की 2 और 17 तारीख को प्रकाशित होने वाले जैनपथप्रदर्शक के अंक में मोक्षमार्गप्रकाशक की 15 दिन में अध्ययन योग्य प्रश्नोत्तरी प्रकाशित की जावेगी। यह सामग्री जो भी स्वाध्याय वर्ष योजना में शामिल होंगे, उन्हें वॉट्स–एप नं. या ई–मेल पर भी भेजी जावेगी। पाठकों को यह सामग्री हमारी वेबसाईट www.ptst.in पर भी उपलब्ध रहेगी।
6. प्रत्येक अध्याय का स्वाध्याय पूर्ण होने पर 1 प्रश्नपत्र दिया जावेगा, जिसके आधार से छात्र अपना मूल्यांकन स्वयं कर सकेंगे।
7. चौथे अध्याय तक का अध्ययन पूर्ण होने के पश्चात् मोक्षमार्गप्रकाशक पूर्वार्ध (1 से 4 अधिकार तक) की परीक्षा प्रत्येक सेन्टर पर आयोजित की जावेगी। इसमें प्रथम श्रेणी के अंकों से उत्तीर्ण होने वाले छात्रों के नाम जैनपथप्रदर्शक में प्रकाशित किये जावेंगे।
8. इसी प्रकार 5 से 9 अधिकार तक का स्वाध्याय पूर्ण होने के पश्चात् मोक्षमार्गप्रकाशक–उत्तरार्ध की परीक्षा भी प्रत्येक सेन्टर पर आयोजित की जावेगी और उसमें भी प्रथम श्रेणी के अंकों से उत्तीर्ण होने वाले छात्रों के नाम जैनपथप्रदर्शक में प्रकाशित किये जावेंगे।
9. किसी सेन्टर पर अधिक छात्र होने पर या मांग पर उपलब्धता अनुसार कॉर्डिनेटर की नियुक्ति कर उनके अध्ययन की व्यवस्था का प्रयास भी किया जावेगा।
10. पूर्वार्ध और उत्तरार्ध दोनों भागों की परीक्षा के आधार पर उनका अंतिम परिणाम तैयार कर सभी उत्तीर्ण छात्रों को एक योग्यता प्रमाणपत्र प्रदान किया जावेगा।
11. 85% या उससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्रों को मोक्षमार्गप्रकाशक संपूर्ण का 1 पेपर और देना होगा। उसमें जो छात्र विशेष योग्यता (75% या अधिक अंक) प्राप्त करेंगे, उन सभी को 51वें प्रशिक्षण शिविर के अवसर पर समारोहपूर्वक विशेष पुरस्कार से सम्मानित किया जायेगा और उनके फोटो जैनपथप्रदर्शक में छापे जायेंगे।

मोक्षमार्गप्रकाशक स्वाध्याय वर्ष हेतु प्रवेश फार्म

स्वाध्याय करने वाले का नाम – _____

पिता/पति का नाम – _____

पत्र व्यवहार का पूरा पता – _____

_____

वॉट्स एप नं. – | | | | | | | | | | |

ई–मेल – .....

मैं इस योजना में भाग लेकर मोक्षमार्गप्रकाशक ग्रन्थ का नियमपूर्वक स्वाध्याय पूर्ण करूँगा/करूँगी।

हस्ताक्षर

(शपथगृहीता)

इसे भरकर डाक/ई–मेल–ptstjaipur@yahoo.com पर या वॉट्स–एप–9785643202 पर भेजें।

आचार्य धरसेन दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय कोटा में –

प्रवेश हेतु अपूर्व अवसर

कोटा (राज.) : आचार्य धरसेन दि.जैन सि.महाविद्यालय के 8वें सत्र का शुभारंभ 25 जून से हो रहा है। महाविद्यालय में 10वीं कक्षा में उत्तीर्ण छात्रों को प्रवेश दिया जाता है। छात्रों को जैनधर्म के सिद्धांतों के अध्ययन के साथ माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान की वरिष्ठ उपाध्याय (12वीं) एवं राज. संस्कृत विश्वविद्यालय की शास्त्री (बी.ए.समकक्ष) डिग्री पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है। छात्रों के लौकिक विकास हेतु अंग्रेजी, विज्ञान एवं कम्प्यूटर की शिक्षा भी प्रदान की जाती है।

यहाँ छात्रों के आवास, भोजन एवं शिक्षा की संपूर्ण व्यवस्था नि:शुल्क रहती है। जो भी छात्र प्रवेश इच्छुक हों वे निम्न पते से पत्र या फोन द्वारा प्रवेश फार्म मंगा सकते हैं। प्रवेश-प्रक्रिया 15 मई से 1 जून 2016 तक विदिशा में लगने वाले प्रशिक्षण शिविर के दौरान संपन्न होगी।

संपर्क – पण्डित धर्मेन्द्र शास्त्री (प्राचार्य), मो. 8104615220; पण्डित रतनचंद चौधरी (निदेशक), मो. 9828063891, 8104597337; **फार्म मंगाने का पता –** बजाज पैलेस, नगर परिषद कॉलोनी, छावनी, कोटा (राज.)

(पृष्ठ 1 का शेष...)

कार्यक्रम के मुख्य कलश विराजमानकर्ता श्रीमती नीलम जैन-श्री परितोष वर्धन जैन थे। आयोजन समन्वयक श्री गौरव जैन के अतिरिक्त श्रीमती चन्द्रादेवी, श्रीमती मीना अजमेरा, श्रीमती आशाजी रांवका, श्रीमती सुनीताजी कासलीवाल, श्रीमती सुनीला गंगवाल, श्रीमती चंपा देवी एवं श्रीमती संस्कृति गोधा का विशेष सहयोग रहा। समस्त कार्यक्रमों में श्री सुधीरजी गंगवाल, श्री नरेशजी रांवका, श्री उजासजी पाण्ड्या एवं श्री पी.सी. छाबड़ा के साथ-साथ सभी का सक्रिय सहयोग रहा।

(4) गढाकोटा-सागर (म.प्र.) : यहाँ अष्टाह्निका पर्व के अवसर पर गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त डॉ. दीपकजी जैन वैद्य जयपुर द्वारा नाटक समयसार, पुरुषार्थसिद्ध्युपाय एवं रत्नकरण्ड श्रावकाचार पर प्रवचनों का लाभ मिला। **-सचिन्द्र शास्त्री**

(5) खनियांधाना-शिवपुरी (म.प्र.) : यहाँ अष्टाह्निका पर्व के अवसर पर ब्र. सुनील भैया शिवपुरी द्वारा प्रथमानुयोग से अध्यात्म की ओर विषय पर प्रवचन तथा नियमसार ग्रंथ एवं पौराणिक कथाओं का वाचन हुआ। इसके अतिरिक्त ब्र. राकेशजी बीना द्वारा तत्त्वार्थसूत्र पर प्रवचनों का लाभ मिला। इस अवसर पर अनेक युवकों ने प्रवचनों से प्रभावित होकर नियमित स्वाध्याय का नियम लिया। **– सुनील जैन सरल**

(6) अजमेर (राज.) : यहाँ पर्व के अवसर पर ऋषभायतन अध्यात्मधाम में दिनांक 16 से 23 मार्च तक पण्डित विनोदजी 'चिन्मय' एवं डॉ. मुकेशजी 'तन्मय' विदिशा के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

इस अवसर पर श्री समयसार परमागम महामंडल विधान का आयोजन हुआ। विधि-विधान के समस्त कार्य उपरोक्त दोनों विद्वानों द्वारा अजमेर वीतराग महिला मंडल के सहयोग से संपन्न हुये। **– नरेश लुहाड़िया**

शोक समाचार

(1) सूरत (गुज.) निवासी श्रीमती कंचनदेवी दीवान (छाबड़ा) धर्मपत्नी स्व. श्री धर्मचंदजी दीवान (छाबड़ा) का दिनांक 28 फरवरी को 74 वर्ष की आयु में आकस्मिक देहावसान हो गया।

ज्ञातव्य है कि आप सदैव जयपुर में लगने वाले शिविरों में उपस्थित रहकर उसका भरपूर लाभ लेती थीं। आपके परिवार द्वारा पंचतीर्थ जिनालय में एक प्रतिमा भी विराजमान की गई है। टोडरमल स्मारक को आपके परिवार द्वारा भरपूर सहयोग सदैव प्राप्त होता रहता है। आपकी स्मृति में संस्था को ज्ञानप्रचार हेतु 11 हजार रुपये प्राप्त हुये।

(2) जयपुर (राज.) निवासी श्रीमती शशिप्रभा सोनी धर्मपत्नी स्व. पण्डित श्रीप्रकाशजी शास्त्री का दिनांक 22 मार्च को 86 वर्ष की आयु में आकस्मिक देहावसान हो गया। आप टोडरमल स्मारक की स्वाध्याय सभा की नियमित श्रोता थीं। यहाँ चलने वाली गतिविधियों की आप सदैव प्रशंसा करती थीं। आपकी स्मृति में संस्था हेतु 1100/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

समवशरण पर विशेष प्रवचन

मुमुक्षु ऑफ नॉर्थ अमेरिका **(MONA)** द्वारा आयोजित विशेष व्याख्यानमाला में दिनांक 12 व 13 मार्च, 2016 को डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा पाँच व्याख्यानों के माध्यम से समवशरण का सुन्दर स्वरूप समझाया गया, जिसे अमेरिका के अनेक शहरों, कनाडा, इंग्लैण्ड, अफ्रीका आदि देशों सहित भारत के भी अनेक नगरों में सुना गया। सभी लोगों ने इस विषय की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। **– भानुबेन, टोरंटो**

प्रकाशन तिथि : 28 मार्च 2016

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127